

सौ वर्षों में देश का अग्रणी तकनीकी संस्थान बना एचबीटीयू

जासं, कानपुर : हरकोर्ट बटलर तकनीकी विश्वविद्यालय (एचबीटीयू) के सौ वर्ष 25 नवंबर को पूरे हो रहे हैं। 25 नवंबर 2021 को गवर्नमेंट रिसर्च इंस्टीट्यूट के नाम से महज तीन कोर्सों के साथ शुरू हुआ यह संस्थान आज विश्व का नामी तकनीकी विश्वविद्यालय बन चुका है, जिसमें एक हजार से ज्यादा छात्र-छात्राएं अध्ययन कर रहे हैं। संस्थान से पढ़े तमाम वैज्ञानिक, शिक्षाविद और इंजीनियर आज देश ही नहीं दुनिया भर में संस्थान का लोहा मनवा रहे हैं। विवि प्रशासन ने सौ वर्ष की उपलब्धियों का ब्योरा संस्थान में बनवाए गए शताब्दी स्तंभ में रखवाया है, जिसका लोकार्पण 25 नवंबर को राष्ट्रपति राम नाथ कोविन्द करेंगे। विवि के कुलसचिव नीरज सिंह ने बताया कि अंग्रेजी शासन के दौरान वर्ष 1907 में

नेनीताल में हुई इंडस्ट्रियल कॉन्फ्रेंस के दौरान रुडकी में इंजीनियरिंग के लिए और कानपुर में केमिस्ट्री के लिए दो अलग-अलग संस्थान स्थापित करने का प्रस्ताव तैयार हुआ था। 1916 से 1918 के दौरान इंडियन इंडस्ट्रियल कमीशन के हेड टी. हालैंड ने केमिकल टेक्नोलाजी, आयल केमिस्ट्री एंड टेक्नोलाजी की शिक्षा के प्रसार का सुझाव दिया। 1920 में कंपनी बाग क्रॉसिंग नवावगंज के पास राजकीय रिसर्च इंस्टीट्यूट की स्थापना हुई। इससे पहले प्रधानाचार्य थे डा. ईआर वाटसन थे। वर्ष 1921 में इस संस्थान का नाम गवर्नमेंट टेक्नोलाजिकल इंस्टीट्यूट रखा गया और तीन प्रमुख कोर्स, एप्लाइड केमिस्ट्री, आयल टेक्नोलाजी व पेंटिंग टेक्नोलाजी और 1924 में केमिस्ट्री विभाग शुरू किए गए।



समारोह के लिए तैयार एचबीटीयू • जागरण

उपलब्धि

- हरकोर्ट बटलर तकनीकी विश्वविद्यालय का शताब्दी वर्ष समारोह 25 को, आएंगे राष्ट्रपति
- संस्थान में बनाए गए शताब्दी स्तंभ में रखवाया जाएगा 100 वर्षों की उपलब्धियों का ब्योरा

1920 में कंपनी बाग नवावगंज में हुई थी राजकीय रिसर्च इंस्टीट्यूट की स्थापना

गवर्नर सर स्पेंसर हरकोर्ट बटलर ने रखी थी नींव

संस्थान की इमारत की नींव ब्रिटिश इंडिया के संयुक्त प्रांत के गवर्नर सर स्पेंसर हरकोर्ट बटलर ने की थी। वर्ष 1926 में जब प्रधानाचार्य ईआर वाटसन रिटायर हो रहे थे और नए प्रधानाचार्य डा. गिलबर्ट जे फोर्लर ने कार्यभार ग्रहण किया तो संस्थान का नाम बदलकर गवर्नर के नाम पर एचबीटीयू रखा गया था।

शुगर व लेदर टेक्नोलाजी कोर्स भी चलता था

वर्ष 1928 में इसी संस्थान में शुगर टेक्नोलाजी कोर्स शुरू किया गया था, जिसे 1936 में अलग से शर्करा संस्थान बनने के कारण बंद कर दिया गया। यही शर्करा संस्थान अब कल्याणपुर में राष्ट्रीय शर्करा संस्थान के रूप में जाना जाता है। इसी तरह वर्ष 1922 में संस्थान में लेदर टेक्नोलाजी कोर्स शुरू हुआ था। बाद में लेदर टेक्नोलाजी इंस्टीट्यूट का भी अलग से निर्माण हुआ।

1965 में बना स्वायत्त संस्थान, 2016 में विवि

वर्ष 1965 में एचबीटीआइ स्वायत्त संस्था बनी। इसके बाद आयल, फैट्स, वैक्सेज, पेंट, वार्निश कोर्स में एमएससी टेक्नोलाजी, केमिकल टेक्नोलाजी में एमएससी, एमटेक के पांच नए कोर्स शुरू हुए। बेसिक साइंस एंड ह्यूमनिटी, डिस्पेंसरी शुरू की गई। इसके बाद संस्थान के लिए 248 एकड़ की भूमि का अधिग्रहण हुआ, जो अब संस्थान के पश्चिमी कैम्पस के रूप में जाना जाता है। यहां हास्टल, आवास, खेलकूद के मैदान भी बनवाए गए।

राज्यपाल भी होंगी समारोह में

जासं, कानपुर : राष्ट्रपति के आगमन के दौरान राज्यपाल आनंदीबेन पटेल और प्राविधिक शिक्षा मंत्री जितिन प्रसाद भी समारोह में शामिल होंगे। कुलसचिव ने बताया कि राजभवन और कैबिनेट मंत्री कार्यालय से स्वीकृति मिल गई है।

वर्ष 2016 में बना विवि

कानपुर विवि से संबद्धता के बाद संस्थान को उग्र टेक्नोलाजी विवि से संबद्ध कर दिया गया। वर्ष 2016 में राज्य सरकार ने अधिसूचना जारी करके संस्थान को विवि का दर्जा प्रदान किया था।

1932 से 1964 के बीच शुरू हुए कई टेक्नोलाजी कोर्स

1932 से 1960 के बीच यहां शोध कोर्सों के साथ ग्लास टेक्नोलाजी, एल्कोहल टेक्नोलाजी, इलेक्ट्रिकल व मैकेनिकल इंजीनियरिंग में बीएससी कोर्स शुरू हुए। 1961 में गणित विभाग, 1964 में प्लास्टिक टेक्नोलाजी, बायोकेमिकल इंजीनियरिंग व फूड टेक्नोलाजी, मैकेनिकल इंजीनियरिंग व इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग कोर्स शुरू हुए। पीएचडी शुरू हुए।